हिमालय की बात

चिनकु और उसकी बहन मिन्नी आज बहुत खुश थे। उनके दादा–दादी आज तीर्थ यात्रा से वापस जो आ गए थे। जब दादा–दादी अपने सभी कामों से निपटकर आराम से बैठे तो चिनकु और मिन्नी भी उनके पास आ बैठे। मिन्नी बोली, "दादा जी, आपके लाए प्रसाद तो हमने खा लिए मगर ये तो बताइए कि आप लोग गए कहाँ थे?"

दादाजी ने बताया, "हम लोग बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा पर गए थे। चिनकु ने पूछा, "ये कहाँ पर हैं? दादाजी बोले, "ये जगहें हिमालय पर्वतों के बीच हैं और उत्तर प्रदेश राज्य में हैं। हम ट्रेन से ऋषिकेश पहुँचे और वहाँ से बस से यात्रा की। बस से ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों को पार करते हुए गए। ऋषिकेश में तो बहुत गर्मी थी, पर जैसे–जैसे हम पहाड़ में आगे और ऊपर बढ़ते गए ठंड बढ़ती गई और हमें स्वेटर पहनना पड़ा। इन पहाड़ों पर घुमावदार सड़क बनी हुई थी जो दूर से एक बड़े साँप की तरह दिखाई दे रही थी। सड़क के एक तरफ पहाड़ और दूसरी तरफ इतनी गहरी खाई कि देखकर सिर चकरा जाता था।

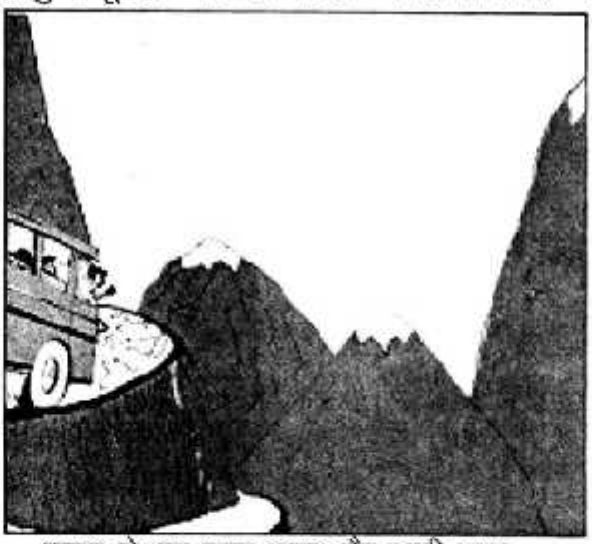

सड़क के एक तरफ पहाड़ और दूसरी तरफ इतनी गहरी खाई

इन पहाड़ों के बीच की खाइयों की गहराई में एक नदी दिखी।"बच्चों ने दादा जी से पूछा, "वह कौन–सी नदी थी?" दादा जी ने कहा, "वह गंगा नदी थी। हम तो इस नदी की शुरुआत तक यात्रा पर गए। क्या तुम लोग गंगा नदी के बारे में जानते हो?"

उस पर मिन्नी ने चहकते हुए जवाब दिया, "गंगा नदी भारत की सबसे पवित्र नदियों में से एक है और यह हिमालय पर्वत से निकली है।"

बर्फ की नदी से निकली गंगा

दादाजी ने आगे बताया गंगा नदी गंगोत्री से थोड़ा उपर गोमुख नामक जगह पर एक बर्फ की नदी से निकलती है। यह जानकर चिनकु और मिन्नी को बड़ा आश्यर्च हुआ। उन्होंने पूछा यह बर्फ की नदी कैसी होती है, नदियों में तो पानी बहता है। बर्फ कैसे बह सकती है।

तब दादा जी ने बताया, "हिमालय के ऊपरी भाग में बारिश तो नहीं होती है मगर बहुत ज़्यादा बर्फ पड़ती है।" यह बर्फ इकट्ठी होकर धीरे–धीरे खिसकते हुए नदी का रूप ले लेती है। जब यह बर्फ की नदी कुछ नीचे आती है जहाँ ठंड थोड़ा कम होती है तो यह बर्फ पिघलने लगती है। हमने

गोमुख में इस तरह पानी को टपकते देखा । इसके बाद यही पानी नदी के रूप में बहने लगता है। इसमें जगह–जगह छोटे–बड़े नदी नाले मिलते हैं और यह नदी बड़ी होकर विशाल गंगा नदी बन जाती है।

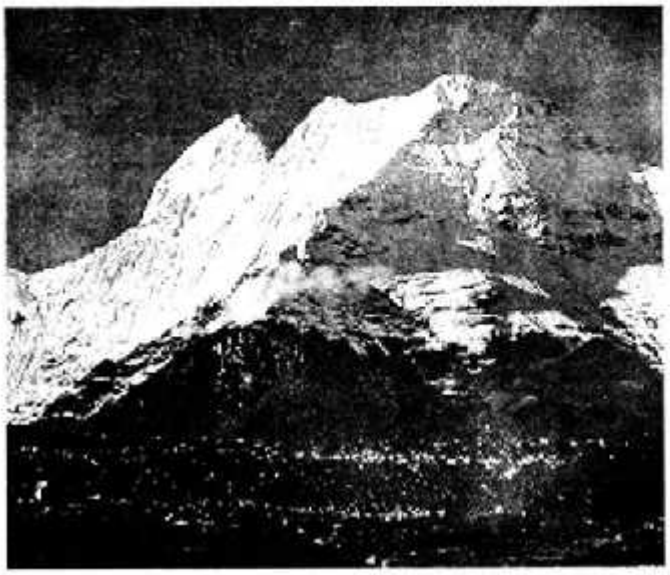

हिमालय की बर्फीली चोटियाँ

बर्फीली चोटियाँ व फूलों की घाटियाँ

अब मिन्नी ने पूछा, "दादाजी जब वहाँ इतनी ठंड और बर्फ होती है तो वहाँ लोग रहते कैसे होंगे?" दादाजी ने जवाब दिया, "ऐसे प्रदेशों में लोग नहीं रहते।"

यहाँ तो केवल गर्मियों में जब बर्फ पिघलने लगती है तभी लोग किसी तरह आ पाते हैं। ऐसे प्रदेशों में पेड़–पौधे तो क्या घास भी नहीं होती है। बस चारों तरफ सफेद बर्फीले पहाड़ और बर्फ की नदियाँ दिखाई देती हैं। हाँ, यहाँ से थोड़ा नीचे आने पर कई जगह हरी–भरी बहुत ही सुंदर फूलों से भरी घाटियाँ दिखाई देती हैं। इन्हें यहाँ बुग्याल कहते हैं। लेकिन ये भी जाड़े के मौसम में बर्फ से ढँके होते हैं।

मगर गर्मियों में जब यहाँ की बर्फ पिघल जाती है तो यहाँ मुलायम घास और छोटे पौधे उग आते हैं जिन पर बहुत ही सुंदर फूल खिलते हैं। गर्मियों में ही यहाँ नीचे के पहाड़ी गाँवों से लोग अपने जानवर, भेड़, बकरी, गाय आदि चराने आते हैं। इन बुग्यालों में बड़े पेड़ नहीं होते हैं। बड़े पेड़ों के जंगल इनसे नीचे की ओर होते हैं। वहाँ के जंगलों में हमारे यहाँ की तरह सागौन के पेड़ नहीं होते। वहाँ तो चीड़, देवदार और बाँझ आदि के पेड़ होते हैं। गर्मी हो या सर्दी इनमें हरियाली बनी रहती है।

केदारनाथ

चिनकु बड़े गौर से दादाजी की बातें सुन रहा था। जब दादाजी चुप हुए तो उसने पूछा, "अच्छा दादाजी आप लोग जिन मंदिरों में गए थे क्या वो भी बर्फ के पहाड़ों के पास हैं?" दादाजी बोले, "बद्रीनाथ और केदारनाथ के मंदिर बर्फीले पहाड़ों के पास हैं। यहाँ भी केवल गर्मियों में ही जा सकते हैं। ये मंदिर साल में छः महीने ही खुलते हैं। जैसे ही जाड़ा शुरू होने को होता है वहाँ बर्फ पड़ने लगती है। तब यहाँ के लोग, पुजारी, यात्री आदि नीचे की ओर अपने गाँवों को लौट जाते हैं।

सीढ़ीनुमा खेतों के बीच में पहाड़ी गाँव

पहाड़ के गाँव

मिन्नी ने पूछा, "दादाजी क्या आपने पहाड़ के गाँव देखे? वे कैसे होते हैं, इसके बारे में बताइए।" दादाजी बोले, "हाँ, हमने आते–आते रास्ते में बहुत से गाँव देखे और एक गाँव में तो हमें दो दिन रुकना भी पड़ा। पहाड़ी गाँव बहुत छोटे होते हैं। एक गाँव में 20–40 से ज़्यादा घर नहीं होते। ज़्यादातर ये पहाड़ी ढलानों पर बसे होते हैं। यहाँ के घर पत्थर और लकड़ी के बने होते हैं।"

पहाड़ की ढलानों पर पत्थर और मिट्टी की दीवारें बनाकर मिट्टी को बहने से रोका जाता हैं। इससे छोटे–छोटे समतल खेत तैयार हो जाते हैं। ये बहुत ही मेहनत से बनते हैं। मगर ये खेत बहुत छोटे होते हैं और इनकी उपज से भी लोगों को साल भर खाने लायक अनाज नहीं मिल पाता। अपने गुज़ारे के लिए यहाँ के लोग खेतों के अलावा और भी कई छोटे–मोटे काम करते हैं जैसे भेड़–बकरी या गाय पालना। दादी बोलीं, "यहाँ के लोग और विशेषकर यहाँ की महिलाएँ बहुत मेहनती होती हैं। दूर–दूर जंगलों से जलावन के लिए लकड़ी इकट्ठा कर लाना, नीचे गहरी घाटियों में उतरकर नदी से पानी भर लाना, जानवरों को चराना और खेत संभालना बहुत ही मेहनत के काम हैं।"

सीढ़ीनुमा खेत

पहाड़ का टूटना

पहाड़ों का टूटना

इतना सुनने के बाद अचानक चिनकु को कुछ याद आया और उसने पूछा, "दादी जी आप लोग तो बस से यात्रा कर रहे थे तो आपको एक गाँव में दो दिन क्यों रुकना पड़ा?"

दादीजी बोलीं, "अरे, हुआ ये था कि जब हम बद्रीनाथ से लौट रहे थे तो एक जगह पर पता चला कि आगे पहाड़ खिसक जाने से ढेर सारा पत्थर और मिट्टी सड़क पर आ गिरी है और सड़क बंद हो गई है। जब तक उन पत्थरों और मिट्टी को साफ नहीं किया जाता हम आगे कैसे बढ़ते। इसलिए हमें एक गाँव में दो दिन रुकना पड़ा।"

अब चिनकु फिर पूछ बैठा, "मगर ये पहाड़ टूटते कैसे हैं?"

इसका जवाब दादा जी ने दिया, "पहले इन पहाड़ों पर घने जंगल हुआ करते थे। इससे होता यह था कि पेड़ों की जड़ें पहाड़ की मिट्टी को जकड़े रहती थीं और उन्हें खिसकने नहीं देती थीं। मगर पिछले 50–100 सालों में व्यापारियों ने इन पेड़ों को काटकर बेच दिया और पहाड़ नंगे हो गए। अब मिट्टी को खिसकने से रोकने का कोई साधन नहीं रहा। इसलिए बरसात शुरू होते ही यह मिट्टी जगह–जगह से खिसकने लगती है। इससे बड़ा नुकसान होता है। कई बार तो गाँव इसमें दब जाते हैं और सैकड़ों लोगों की मौत हो जाती है।"

जंगल बचाओ, चिपको आंदोलन

गौरा देवी

अबकि मिन्नी ने जानना चाहा कि पहाड़ के लोगों ने इन जंगल काटने वालों को रोका क्यों नहीं। तब दादाजी ने बताया कि शुरू में पहाड़ी लोग इन व्यापारियों से डरते थे मगर बाद में उन्होंने संगठित होकर इसका विरोध करना शुरू किया। करीब 30 साल पहले इन्हीं पहाड़ी गाँवों के लोगों ने अपने जंगल बचाने के लिए एक आंदोलन शुरू किया था जिसे चिपको आंदोलन कहते हैं।

एक बार पहाड़ी के जोशीमठ शहर में रेजी गाँव के जंगल की निलामी होनेवाली थी। विरोध में गाँव के सारे मर्द धरना देने जोशीमठ चले गए।

इस बीच मौका पाकर ठेकेदार के आदमी जंगल काटने गाँव पहुँच गए। ऐसे में उस गाँव की एक औरत गौरा देवी ने बाकी औरतों को समझाया कि अगर वो पेड़ों से चिपक कर खड़ी हो जाएँ तो ठेकेदार के आदमी पेड़ नहीं काट पाएँगे। यह बात सभी औरतों को पसंद आयी और उन्होंने ऐसा ही किया। उनके ऐसा करने से ठेकेदार के आदमी पेड़ नहीं काट पाए। धीरे–धीरे यह बात सबको मालुम पड़ी तो सबने ऐसा ही करना शुरू कर दिया। इस तरह इस चिपको आंदोलन के कारण अब भी थोड़े बहुत जंगल बचे रह गए हैं। यह जानकर चिनकु और मिन्नी ने कहा,

"यह तो बहुत अच्छा तरीका है पेड़ों को कटने से रोकने का!"

पहाड़ी महिलाएँ बहुत मेहनती होती हैं

अभ्यास

1. *नक्शा नं. 1 में देखो – हिमालय कहाँ से कहाँ तक है ?*
2. *हिमालय से कौन–कौन सी नदियाँ निकलती हैं? उनके नाम लिखो।*
3. *इनमें से सबसे लंबी नदी कौन–सी होगी,?*
4. *हिमालय नाम का अर्थ क्या है पता करो।*
5. *अपने यहाँ की नदियों में गर्मी के मौसम में पानी बहुत कम हो जाता है। लेकिन हिमालय से निकलने वाली नदियों में गर्मियों में भी भरपूर पानी रहता है। इसका क्या कारण हो सकता है?*
6. *बुग्याल में फूल कब खिलते हैं व जानवर कब चरने आते हैं?*
7. *तुम्हारे यहाँ के खेत और हिमालय के खेतों में क्या अंतर है?*
8. *क्या हिमालय में भी तुम्हारे यहाँ के जंगलों के पेड़ उगते हैं?*
9. *जंगलों के कटने से हिमालय के लोगों को क्या परेशानी हुई है?*

बर्फ से ढका हुआ गाँव